पढ़ो और बढ़ो

कार्यक्रम एवं गतिविधियां
- सूरजकुंड हस्तशिल्प मेले का भ्रमण
- जीवन कौशल और नैतिक प्रशिक्षण देने के लिए कार्यशाला का आयोजन
- चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन
- नेत्र जांच कैंप का आयोजन

फीचर स्टोरी
- बच्चों का ककहरा

सफलता की कहानी
- नितिन, लाभार्थी, पढ़ो और बढ़ो

गेल-सीएसआर की एक पहल

गेल GAIL

AROH FOUNDATION

Events

1

सूरजकुंड हस्तशिल्प मेले का भ्रमण

हस्तशिल्प कला को प्रदर्शित करने के लिए फरीदाबाद के सूरजकुंड में हर साल अन्तर्राष्ट्रीय मेला आयोजित किया जाता है। देश के विभिन्न प्रान्तों के संस्कृति की झलक सूरजकुंड मेले में देखने को मिलती है। इसी क्रम में आरोह फाउंडेशन और गेल इंडिया के सहयोग से गाजियाबाद में संचालित पढ़ो और बढ़ो केन्द्रों की शिक्षिकाओं को देश के विभिन्न राज्यों की संस्कृति की झलक दिखाने के लिए 13 फरवरी को मेले का भ्रमण कराया गया। शिक्षिकाओं ने हस्तशिल्प और हथकरघा से निर्मित वस्तुओं को देखा और मेले का आनंद उठाया। इस भ्रमण में कुल 50 शिक्षिकाओं ने हिस्सा लिया। मेला भ्रमण का आयोजन पढ़ो और बढ़ो के परियोजना समन्वयक मिर्जा मुनीर ने किया।

सूरजकुंड मेले में भ्रमण करती पढ़ो और बढ़ो शिक्षिका

2

जीवन कौशल और नैतिक प्रशिक्षण देने के लिए कार्यशाला का आयोजन

उत्तरी पूर्वी दिल्ली में पढ़ो और बढ़ो केन्द्र के लाभार्थियों और शिक्षिकाओं को जीवन कौशल और नैतिक प्रशिक्षण देने के लिए एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। समाजसेवी संस्था सार्मथ्य की तरफ से आयोजित इस कार्यशाला में लाभार्थियों और शिक्षिकाओं के सम्पूर्ण विकास के बारे में बताया गया। पढ़ने के तौर–तरीके, बच्चों के सीखने के गुण, अपने से बड़ों का आदर व पर्यावरण के देखभाल के बारे में बताया गया।

सार्मथ्य संस्था द्वारा बच्चों की नैतिक जानकारी देते हुए

3

चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

नन्हें हाथों से पेंटिंग बनाते बच्चे

कला व्यक्ति की सोच को दर्शाता है। हरे–भरे पेड़–पौधे, हंसते–खेलते बच्चे और प्रदूषण मुक्त समाज का एक ऐसा प्रतिबिम्ब बच्चों ने पेंटिग के माध्यम से प्रदर्शित किया। उत्तर पश्चिमी दिल्ली के रमेश एनक्लेब में स्थित पढ़ो और बढ़ो केन्द्र पर 18 फरवरी को चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई जहां पर बच्चों ने अपनी सोच एवं प्रतिभा को कला के माध्यम से कागज पर उकेरा। प्रतियोगिता में कुल 50 लाभार्थियों ने हिस्सा लिया। इनमें प्रथम स्थान अस्मिता, द्वितीय स्थान प्रवीण और रूपा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। चित्रकला प्रतियोगिता में परियोजना समन्वयक प्रियंका शर्मा, सुपरवाईजर ऊषा देवी और संतोष देशपाल मौजूद थी।

4

नेत्र जांच कैंप का आयोजन

जांच कैंप में बच्चों की आंख जांच करवाते परियोजना समन्वयक आशीष कुमार

उत्तर पूर्वी दिल्ली के शहादरा स्थित झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया में संचालित पढ़ो और बढ़ो केन्द्रों के बच्चों की आंख जांच के लिए, सांई रेटिना फाउंडेशन और आरोह फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से नेत्र जांच कैंप लगया गया। इसमें पढ़ो और बढ़ो के लगभग 100 लाभार्थियों का नेत्र जांच किया गया। इसमें लगभग 23 बच्चों की आंखों में दृष्टिदोष पाई गई। लाभार्थियों और उनके परिजनों की जांच करते हुए डॉ. अजय सिंह ने बताया कि बच्चों को खाने में हरी पत्तेदार सब्जियां, दाल, गाजर, और दूध का सेवन करना चाहिए। इस जांच कैंप में परियोजना समन्वयक आशीष कुमार, सुपरवाईजर मनोज कुमार, पुष्पा देवी, शिक्षिका सरोज, सुनीता मिश्रा, मीरा और अनीता देवी मौजूद थी।

बच्चों का ककहरा...

बच्चे किसी भी चीज को बड़े आराम से किसी और चीज में ढाल लेते हैं। बेवजह सी पड़ी कोई ईंट कभी गाड़ी बन जाती है, कभी पुल और कभी सड़क किनारे का मकान.... बच्चों की रचनात्मकता की कोई सीमा नहीं हैं। अपने अनुभवों से हम जानते हैं कि खेल तो मौज–मस्ती के लिए खेले जाते हैं, मगर खेल के दौरान बच्चे समूह में सहभागिता, सामंजस्य, तर्क करना, सवाल–जवाब, बात कहना और मनवाना, जिम्मेदारी बांटना और उसका निर्वहन करना जैसे असल जिन्दगी के कई जरूरी कौशलों से रूबरू होते हैं और उनमें महारत भी हासिल करते हैं। ये सब करते हुए उनका वास्ता भाषा से पड़ना लाजमी है। खेल के दौरान भाषा को वे कई तरह से इस्तेमाल करते हैं, उसे तोड़ते–मरोड़ते और जरूरत के मुताबिक उसे गढ़ते हैं। यानी ईंट जैसी कोई चीज हो या आलू–कचालू जैसे बेमानी लफ्ज, अपनी बेहद कल्पनाशीलता का इस्तेमाल करते हुए बच्चे खेल गीतों को नए रूपाकारों और मायनों में ढाल देते हैं। जैसे–

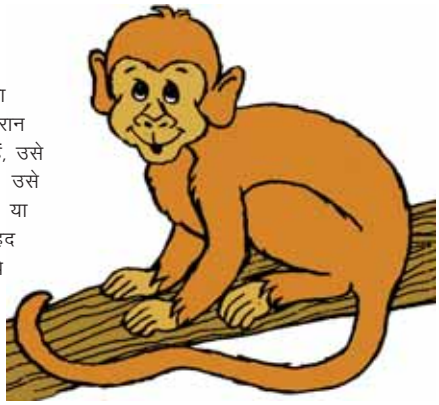

आलू–कचालू कहां गए थे?
बन्दर की झोपड़ी में सो रहे थे...

इस गीत में आलू सब्जी वाला नहीं कोई और हो सकता है जिससे बच्चे कभी टूटी झोपड़ी में, तो कभी बैंगन की डलिया में, कभी प्याज की टोकरी में सुला देते हैं। बच्चों द्वारा गाए जाने वाले कुछ खेल गीत पहली नजर में बड़ों का मजाक उड़ाते नजर आते हैं जैसे– गुरू जी नमस्ते, पान खाओ सस्ते....

लेकिन इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि ये भाषा के रोचक इस्तेमाल और रचनात्मकता की मिसाल हैं। वैसे भी, व्यंग्य तो साहित्य की एक जानी–मानी विधा है। रचनात्मकता की एक और मिसाल देखिए, जहां एक गुड़िया को सुन्दरता से बच्चों ने पेश किया–

मेरी गुड़िया प्यारी–प्यारी
बातें उसकी न्यारी–न्यारी
नन्हीं सी यह फूल सी बच्ची
छोटी सी पर दिल की सच्ची

यह कविता एक गुड़िया की सुन्दरता के बारे में बताता है। लफ्जों की बाजीगरी से बने कई गीत खेल का अहम हिस्सा होते हैं, उनमें खेल के लिए जरूरी सवाल, सूचनाएं और निर्देश होते हैं, जैसे–

अक्कड–बक्कड़ बम्बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ...

कई खेल और खेल गीत स्थानीय पर्वों–उत्सवों से भी जुड़े होते हैं। टेसू के गीत देश के कई हिस्सों में गाए जाते हैं। इनमें स्थानीय विविधता भी दिखाई देती हैं, जैसे–

टेसू राजा बड़े अलाल, टेसू आया टेसन से
खाते बासी रोटी दाल, रोटी खाई बेसन से।
मेरा टेसू यहीं खड़ा,
टेसू अकड़ करें, टेसू मकड़ करे।
खाने को मांगे दही बड़ा
टेसू सौ रुपए लेकर टरे

बच्चे अपने खेलों के लिए मौके और उनके लिए माकूल गीतों की खोज या रचना कर ही लेते हैं, चाहे वह मौका स्कूल जैसा अमूमन उबाऊ माहौल का ही क्यों न हो। कुछ मिसाल देखिए। पता नहीं इन्हें बच्चों ने रचा है या बच्चों की तरह जिज्ञासु, शरारती और उर्वर दिल–दिमाग वाले किसी बड़े ने–

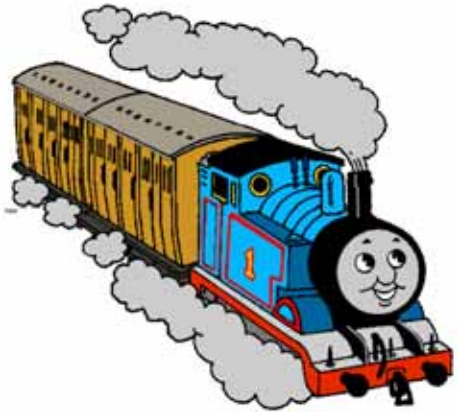

रेल का डिब्बा खाली है,
छुट्टी होने वाली है।

समय बदल रहा है समय के साथ खेलों की प्रकृति भी बदल रही है। कोई 15–20 साल पहले तक मैदानों में गिल्ली–डण्डा, सितोलिया, कबड्डी, गधा–मार जैसे धमा–चौकड़ी, उठा–पटक और भागमभाग से भरे खेल खेलते बच्चे अक्सर नजर आते थे। मगर अब उनकी जगह टेलीविजन पर परोसे जाने वाले नजाकत भरे नफीस खेल लेते जा रहे हैं। फिर भी, जो बच्चे मौज मस्ती के लिए खेलते हैं, वे किसी और चीज की परवाह नहीं करते। सीखाने के मौज–मस्ती भरे सिलसिले की अहमियत समझने वाले बड़े भी इससे इन्कार नहीं करते। और यह भी सच है कि दुनिया के हर रंग की तासीर जानने वाले बच्चे हर हाल में उनका इस्तेमाल बखूबी जानते हैं, जैसे–

हरे नीम की डाल पर तीन तोते सोते थे।
एक पटाखा टूटा जैसे कोई बरतन टूटा
डर गए तीनों तोते।
अपनी डाल को छोड़कर उड़ गए तीनों तोते
पहला तोता फुर्र
दूसरा तोता फुर्र फुर्र
तीसरा तोता फुर्र फुर्र फुर्र

कुछ इसी तरह की परिकल्पनाओं और रचनाओं का प्रयोग आरोह फाउंडेशन अपनी रेमेडियल कक्षाओं में संचालित कर रहा है। जिसका उद्देश्य यह है कि हम जो भी विषय बच्चों को सिखा रहे हैं बच्चे उन्हें अपनी रोजमर्रा की जिंदगी से जोड़ते हुए अपनी सीखने की प्रवृत्ति को और अधिक सुदृढ करें।

PAB News

पढ़ो और बढ़ो केन्द्र पर अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त कर रहे बच्चों को स्कूल से जोड़ने की कवायद शुरू

To Join us visit on or mail us on www.arohfoundation@gmail.com

Success Story

नितिन, लाभार्थी,
पढ़ो और बढ़ो, पूर्वी दिल्ली

मन के हारे हार है और मन के जीते जीत! जिंदगी सबके लिए आसान नहीं होती या यूं कहें की जिंदगी किसी के लिए भी आसान नहीं होती लेकिन जिसने मन को जीत लिया समझो वो जी गया। जिंदगी की आधी से ज्यादा कठिनाइयां मन पैदा करता है। मुश्किलें हर किसी की जिंदगी में आती और हर इंसान उन्हें अलग–अलग तरीके से झेलता है, कोई रोते हुए, कोई हंसते हुए, कोई जूझते हुए तो कोई इंतजार करते हुए कि ये भी दिन नहीं रहेंगे। ऐसी ही एक जूझती हुई जिंदगी की कहानी है नितिन की।

हर समझदार बच्चे का एक सपना होता है कि वो ये बनेगा, वो बनेगा। ऐसा करेगा,वैसा करेगा। इस बच्चे का सपना है फौजी बनकर देश की सेवा करने का। नितिन के पिता किसान थे और देश सेवा से वो प्रभावित थे। उनका सपना था कि मैं अगर देश की सेवा नहीं कर सका तो मेरा बेटा देश की सेवा करके मेरा नाम रोशन करें। लेकिन नितिन की जिंदगी ने तब उन्हें पहला झटका दिया जब उसके पिता की अचानक मौत हो गई। नितिन की मां अपने बच्चे के सपने को पूरा करने के लिए कानपुर से दिल्ली आ गई। नितिन की मां एक एक्सपोर्ट कंपनी में नौकरी करके अपने बच्चे का पेट भरती थी। लेकिन उसके पास नितिन के जन्म का कोई प्रमाणपत्र नहीं था जिस कारण वह अपने बच्चे का दाखिला स्कूल में नहीं करा सकती थी। एक दिन नितिन की मां आरोह फाउंडेशन और गेल इंडिया द्वारा संचालित पढ़ो और बढ़ो केन्द्र पर आई और अपने परिवार की कहनी बयां करके अपने बच्चे को स्कूल से जोड़ने के लिए मिन्नतें करने लगी। पढ़ो और बढ़ो की शिक्षिका पूनम ने नितिन का दाखिला पढ़ो और बढ़ो केन्द्र पर किया जहां पर उसे एक साल तक अनौपचारिक शिक्षा देकर उसके सभी दस्तावेजों को स्थानीय कार्यलय से बनावाकर नगर निगम प्राथमिक विद्यालय में करवाया। नितिन अब दूसरी कक्षा में पढ़ता है। नितिन की मां आज बहुत खुश है और वह कहती है कि यह सब कुछ पढ़ो और बढ़ो स्कूल के कारण ही हो पाया है। मैं आरोह फाउंडेशन और गेल इंडिया को दिल से धन्यवाद देती हूं कि जो हमारे जैसे कितने गरीब लोगों के सपने को साकार करने का नेक काम कर रही है।

GAIL

PAB is a CSR initiative of GAIL (India) Ltd, a Maharatna Central Public Sector Enterprise, incorporated in August 1984 under the Ministry of Petroleum & Natural Gas (MoP&NG).. GAIL has been actively initiating CSR activities, for carefully chosen social welfare programmes. Today, CSR & sustainability development is accorded high priority in the organizational ethos and attempted to be interwoven in all the business activities and the projects that are being undertaken by the company.

With its project Padho-Badho GAIL envisages to mainstream at least 50,000 under privileged children in government schools through its Non formal Education Centres for out-of-school children

PAB

Padho aur Badho is an initiative to prepare and mainstream out-of-school children into formal schools. It is one of the pioneering programmes being implemented by AROH, in association with GAIL- an intervention in the field of education, offering preparatory schooling and care to the out-of-school children, between 6-14 years of age. The project is being implemented in slums of Delhi/NCR. Since its inception in February 2010, till date Padho aur Badho has grown in scale and coverage – starting initially with 30 children in 2008, in one centre in NOIDA. Today there are 5 clusters of 50 centres each in NOIDA/East Delhi, Ghaziabad, South Delhi, West Delhi and North-East Delhi with a total of 7500 children enrolled in 250 centres.

AROH

AROH Foundation is an ISO 9001:2008 Certified, non-governmental, registered Society under Societies Registration Act XXI 1860, formed by a group of likeminded professionals and academicians from various segments of the Society. AROH aims to provide effective assistance to rural, weaker and poor communities, and especially women within these communities, by developing their life-skills, economic-skills and socio-cultural-skills, thereby creating model communities in which all are self-reliant.

AROH's overarching mission is to create an equitable society where all human beings coexist with dignity. For more than 12 years now, AROH Foundation has been, and continues to be involved in meaningful, empowerment-driven initiatives that distinctly impact the quality of life of the weaker sections of the society.

Published by AROH Foundation I F-52, Sector 8, NOIDA 201301 I www.aroh.in I arohfoundation@gmail.com I 0120-4328400-19